ख़ौफ व भय –

अल्लाह से नज़दीकी का माध्यम

मोमिन बन्दे का यह इमान व विश्वास है के अल्लाह तआ़ला ही सत्य मअ़बूद है। वही मालिक व क़ालिख है और बडाई व किबरियाई उसी के योग्य है। सर्वश्रेष्ठ क़ुदरत उसी के गुण व लक्षण है। अर्थात एक बन्दे की अपनी मौला से संबंध व नाता इस की बंदगी का सत्य सबूत है।

इस पर अपने आखा व स्वामी का पालन और इस के अहकाम को संपादन अनिवार्य है तथा अपने पालनहार से ड़रना और ख़ौफ व भय रखना इस के लिए अत्यन्त अवश्य है। अल्लाह तआ़ला के दरबार में ख़ौफ व भय के साथ रहने वालों से संबंधित अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- और जो अपने रब के सामने खड़े होने से डर रखता है उस के लिए 2 जन्नतें हैं।

(सुरह अर रहमानः 55:46)

भय व खौफ का याचना यह है के बन्दे का हर कर्म व कथन अल्लाह की मरज़ी के अनुसार रहे। इस की हर हरकत व चलन व गति अल्लाह तआ़ला की सन्तुष्टि के अनुसार रहे। वह हैरान और हर घड़ी इस खौफ में गुज़ारे के अल्लाह तआ़ला कहीं इस के किसी कर्म से या इस कि किसी बात से नाराज़ ना हो जाए।

जब कोई इस प्रकार खौफ व भय का ग्राह्य हो जाता है तो उसे ऐसी-ऐसी नेअ़मतें (वरदान) दी जाती है के किसी जिन्न व बशर ने सोंचा भी ना होगा। इस के लिए 2 जन्नतें होंगी।

जन्नत में विशेष व उच्च स्थान की नेअ़मतों व वरदान होगें। उस के लिए घने बाग़ होंगे। बहते नहरें होंगे। सम्पूर्ण फलों की 2-2 क़िस्में होंगी। नज़रें नीची रखने वाली या शक्ति व मरजान जैसी हूरान बहशत होंगी। जिन्हें कोई मनुष्य कोई जिन्न देखी और ना छुआ होगा।

हज़रत अबदुल करीम रहमतुल्लाहि अलैह खौफ की महत्वपूर्ण बतलाते हुए कहते हैः-

भाषांतरः- अवश्य अल्लाह तअ़ाला ने बन्दों पर फर्ज़ कर दिया है के वह इस से खौफ व भय करें। अर्थात अल्लाह तअ़ाला का आदेश है और यदि तुम मोमिन हो तो मुझ से ड़रते रहो।

(सुरह आ़ले इ़मरानः 175) (अल रिसाला अल खशीरियह, अल फस्लऔला, बाब अल ख़ौफ़)

चेतावनियों के द्वारा अल्लाह तअ़ाला का निर्देश

बन्दा जब अपने दिल में अल्लाह तअ़ाला का खौफ रखता है तो इस का अ़मली जीवन में तक़वा व धर्मनिष्ठता पैदा होती है। अल्लाह तअ़ाला ने अपने पावन कलाम में जहाँ भी अपनी जात से डरने, खौफ करने एवं तक़वा व परहेज़गारी अपनाने का आदेश दिया, क़यामत के दिन परेशानी उठाने वालों का वर्णन फरमाते हुए सुरह ज़ुमर में अल्लाह तअ़ाला का आदेश हैः-

भाषांतरः- उनके लिए उनके ऊपर से भी आग की छतरियाँ होंगी और उनके नीचे से भी छतरियाँ होंगी। यही वह अज़ाब है, जिस से अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को डराता हैः "ऐ मेरे बन्दे ! अतः तुम मेरा डर रखो।"

(सुरह अल ज़ुमरः 39:16)

अल्लाह के खौफ का एक विशाल आदर्श

अल्लाह तआ़ला से ड़रने और धर्मनिष्ठता प्राप्त करने वाले बन्दे अल्लाह तआ़ला के आदेश के समापन किस प्रकार करते हैं। अल्लाह तआ़ला का खौफ से इन के दिलों की कया स्थिति हुआ करती है ? इस सिलसिले में सहीह बुखारी में वर्णन एक घटना दर्शन हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबु सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, वह हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से वर्णित करते हैं के आप ने पूर्व समुदाय के एक व्यक्ति का वर्णन किया। जिसे अल्लाह तआ़ला ने धन व औलाद से आभूषण किया था। सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः जब इस के संसार से जाने का समय आया तो इश ने अपनो लडकों से कहाः पिता की हैसियत मैं ने तुम्हारी कैसी परवरिश की? इन्हों ने कहाः आप ने पिता की तरह परवरिश की, इस ने कहाः तुम्हारे पिता वह हैं जिन्हों ने अल्लाह तआ़ला के दरबार मं कोई नेकी (भलाई) नहीं पेश की। हज़रत खतादह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने इस की शरह फरमाई के नेकी जमा ना करवाई। जब मैं अल्लाह तआ़ला के दरबार में पेश होंगा तो वह मुझे अज़ाब व यातना देगा। तो तुमयाद

रखो! जब मैं देहान्त कर जाउँ तो मुझे जला देना। यहाँ तक के मैं हो जाउँ। तो मुझे पीस देना, या इन्हों ने कहाः रेज़ा-रेज़ा करना, फिर जब तेज़ हवा चले तो मुझे उडा देना, और इस ने इस बात पर अपने बेटों से वचन लिया। अल्लाह तआ़ला की क़स्म! इन्हों ने ऐसा ही किया तो अल्लाह तआ़ला का आदेश हुआः "कुन" तो वह मनुष्य खडा हो गया। फिर अल्लाह तआ़ला ने आदेश दियाः ऐ मरे बन्दे! तुझे ऐसा करने पर किस चीज़ ने निरुद्ध किया? इस ने निवेदन कियाः तेरे खौफ व भय ने या यह कहा के तुझ से ड़रते हुए। तो इस की तलाफी युं हुई के अल्लाह तआ़ला ने इस पर रहम कर दिया।

(सहीह अल बुखारी, हदीस संख्याः 6481)

तथापि अल्लाह तआ़ला के यातना व अज़ाब से बचने और खौफ करने का यह तरीक़ा व विधि श्रेष्ठ नहीं था। क्यों के शरीर ज़िरात पूरब व पश्चिम में भी फैल जाएं तब भी अल्लाह तआ़ला उन को एकजा कर के जीवित करने पर क्षमता रखता है।

उतः उस व्यक्ति ने जो कुछ अपने बेटों से कहा था उस का कारण यही था के वह अल्लाह तआ़ला से डरता है। उस के दिल व मन में पालनहार का खौफ व भय था। केवल अल्लाह तआ़ला के खौभ व भय के कारण से अल्लाह तआ़ला ने उस के पापों को क्षमा कर दिया एवं उस पर करम व करुणा कर दी।

नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की शरीअ़त में यदि कोई इस प्रकार की वसीयत करता है तो वह वसीयत अ़मल के अयोग्य होती है और अल्लाह तआ़ला औलाद इसपर अ़मल करती है तो वह पापी घोषित पाता है।

क़यामत के दिन 7 लोग रहमत के साये में

किताब व सुन्नत में जहाँ अल्लाह तआ़ला और इस के हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की आज्ञालंघन करने एवं इन से खौफ व भय ना करने वालों के अधिकार में चेतावनियाँ सुनाई गईं।

वहीं अल्लाह तआ़ला के खौफ रखने और इस के आज्ञापालन करने वालों के अधिकार में गवाही भी सुनाई गईं। इन्हें बेसायगी तथा परश्रमों वाले दिन साये रहमत प्रदान किए जानेकी शुभ समाचान दी गई। सहीह बुखारी शरीफ में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, वह हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से वर्णित करते हैः आप ने आदेश फरमायाः 7 लोग ऐसे हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला अपने रहमत के साये में रखेगा। इस दिन इस के रहमत के साये के अतिरिक्त कोई साया ना होगाः
(1)- इन्साफ व न्याय पसंद राजा।

(2)- वह यूवक जो अपने रब की इ़बादत में परवान चढा हो।

(3)- वह व्यक्ति जिस का दिल मसजिद से निकलते निकलते समय दोबारा मसजिद को टूटने तक मसजिद ही में लगा रहता है।

(4)- वह 2 लोग जो अल्लाह तआ़ला के लिए मुहब्बत व स्नेह करते हों। इसी के लिए मिलते हों तथा इसी के लिए जुदा होते हों।

(5)- वह मनुष्य जिसे हसब व नसब और सुन्दरता वाली स्त्री ने (पाप के लिए) अपनी ओर बुलाया हो तो इस ने कह दियाः मैं अल्लाह तआ़ला से खौफ व भय करता हुँ।

(6)- वह मनुष्य जो छिपे रूप से सदखा करे, यहाँ तक के इस का बायां हाथ ना जान सके के इस के सीधे हाथ ने कया खर्च किया है?

(7)- एवं वह मानव जो तन्हा में अल्लाह तआ़ला को याद करे और इस की आँख से आँसू रवां हो गए।

(सहीह अल बुखारी, हदीस संख्याः 660)

सहाबा किराम के मुजाहिदात एवं भय कि स्थिति

सहाबा किराम बावजूद यह के इन्हें जन्नत की गवाही दी जा चुकी थी, किन्तु अल्लाह तआ़ला के खौफ व भय का जो प्रभाव था इस का अंदाजा नहीं किया जा सकता। अर्थात हज़रत शैखुल इसलाम आरिफ बिल्लाह इ़माम मुहम्मद अनवारुल्लाह फारूखी रहमतुल्लाहि अलैह अपनी पुस्तक हक़ीक़तुल फिक़्ह में इस सिलसिले में रिवायत व्याख्या करते हैः-

एक दिन हज़रत अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने अफसोस से फरमाया के सहाबा किराम की यह स्थिति थी के रात भर वह इ़बादत और

क़ुरान की तिलावत में व्यस्त रहते और इतना रोते के आँसूओं से उन के कपडे गीले हो जाते।

एवं अब ऐसे लोग देखे जाते हैं के रात अज्ञानता में गुज़ार देते हैं। इस के बाद हज़रत अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु को किसी ने हंसते हुए नहीं देखा। उस समय तक के आप शहीद हो गए।

(हक़ीक़तुल फिक़्ह, जिल्द 1, पः 277)

अल्लाह का खौफ – विशाल वरदान एवं सालेहीन का स्तर

अल्लाह तअ़ाला का खौफ ऐसा विशाल वरदान व नेअ़मत है के जिसे यह स्थिति हो जाएवह संसार व परलोक दोनों में सफलत होगा।

सहाबा किराम व अहले बैत इ़ज़ाम एवं समुदाय के सालेहीन (भले लोग) व धर्म के पूर्वज के जीवन हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ आदर्श हैं। वह अपने जीवन में हर क्षण अल्लाह तअ़ाला से डरते रहते तथा परलोक (आखिरत) की चिन्ता मं रहते।

दिन की रोशनी हो या रात का अंधेरा, हमेशां वह अपने रब से लौ लगाए रहते हैं। इनके खौफ व भय को वर्णन करते हुए अल्लाह तअ़ाला फरमाता हैः-

भाषांतरः-

www.Ziaislamic.com

(सुरह अल सजदहः 06)

इ़माम ज़ैनुल आबेदीन पर खौफ का प्रभाव

हज़रत अबुल हसनात सैय्यद अबदुल्लाह शाह नक्षबंदी मुजद्दिदी खादरी मुहद्दिसे-देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने हज़रत इ़माम ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के खौफ व भय कि स्थिति वर्णन करते हुए फरमायाः

हज़रत ज़ैनुल आबेदीन अ़ली बिन हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु जब वुज़ू करते तो आप का चहरा ज़र पढ जाता। घर वालों ने कारण पूछा तो फरमायाः तुम जानते नहीं के किस के सामने मैं खडा होने का उद्देश्य करता हुँ।

(मवाइज़ हसना, जिल्द 1, पः 250)

हज़रत ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के आँसू से परनाला बह रहा था हज़रत के आँसूवों का वह पानी किसी व्यक्ति के शरीर पर गिरा। इस व्यक्ति ने पूछा के परनाले से जो पानी गिर रहा है वे अपवित्र व अशुद्ध तो नहीं ? हज़रत ने उत्तर दिया धो ड़ालो यह पापी के आँख का पानी है।

(मीलाद नामा, लेखकः हज़रत मुहद्दिसे-देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह, पः 138)

www.Ziaislamic.com

इस प्रकार ये लोग के दिल अल्लाह तआ़ला के खौफ व भय से भरे रहते एवं यह पावन व पवित्र आत्मायं हमेशां अल्लाह तआ़ला के दरबार में ड़रते एवं गिड गिडाते रहते।

मुसलमान हमेशा आखिरत की चिन्ता करे !

हर मुसलमान को चाहिए के वह इन धर्म के पूर्वजों के धन्य जीवन से रोशनी प्राप्त करे। अपने भीतर खौफ पैदा करे एवं हमेसा आखिरत का विचार मन में रखे तथा क़यामत के दिन के हिसाब को याद रखे एवं यह बात बुद्धी में रखे के एक समय ऐसा भी आने वाला है।

जिस में अल्लाह तआ़ला ज़रा बराबर की गई नेकी व भलाई का बदला देगा तथा ज़रा बराबर की हुई बुराई सज़ा देगा। अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- अतः जो कोई कण भर भी नेकी करेगा, वह उसे देख लेगा एवं जो कोई कणभर भी बुराई करेगा, वह भी उसे देख लेगा।

(सुरह अज़ ज़िलज़ालः 99:7-8)

हज़रत इ़माम आज़म और अल्लाह का खौफ

हज़रत शैखुल इसलाम आरिफ बिल्लाह इ़माम मुहम्मद अनवारुल्लाह फारूखी रहमतुल्लाहि अलैह हज़रत इ़माम आज़म अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की नमाज़ों की स्थिति तथा आप के अल्लाह तआ़ला से खौफ व भय

का वर्णन करते हुए अल इनतेसार, अल क़रैत अल हसनात और तबीज़ अल सहीफा के हवाले से रिवायत व्याख्या करते हैः-

यज़ीद बिन लुबैस रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैः एक दिन इमाम साहब ने इशां में सुरह अज़ ज़िलज़ाल पढी और इमाम अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी जमात में शरीक थे। नमाज़ के बाद देखा के उन पर चिन्ता व फिक्र के आसार व स्थिति दिख रही है।

मैं चला गया। जब सवेरे के खरीब आकर देखा तो आप खडे हैं। और दाढी पर हाथ रखे हुए कह रहे हैः-

भाषांतरः- ऐ ज़रा भर भलाई का इस से श्रेष्ठतर बदला देने वाले पालनहार। ऐ ज़रा भर बुराई का इसी के बराबर बदला देने वाले पालनहार। तेरे बन्दे नुअमान को नरक और इस से खरीब करने वाली चीज़ों से मुक्ति प्रदान कर तथा तेरी बड़ी रहमत के साये में उसे स्थान दान कर।

(हक़ीक़तुल फिक़्ह, जिल्द 1, पः 280)

खौफ खुदा और अच्छे कर्म की बरकतें

अल्लाह तआला की आज्ञापालन, इस के हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का पालन करने एवं अपने दिलों में अल्लाह के खौफ रखते हुए, इसलाम धर्म के सुन्हरे सिद्धांत व नियम पर पाबंद रहने के अनगिनत बरकतें हैं।

www.Ziaislamic.com

अल्लाह तआ़ला इन पर संसार में भी करम की नज़र फरमाता है तथा परलोक (आखिरत) में भी इन्हें संबोधित करने का वचन देता है। रब की सन्तुष्टि एवं प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए इखलास के साथ कर्म करने तथा इस से खौफ करने वालों पर अल्लाह तआ़ला कैसा आभूषण होता है।

इन का कर्म अल्लाह तआ़ला के दरबार में कया हैसियत रखता है, हदीस मुबारक की रोशनी में समझते चलें-

भाषांतरः- हज़रत अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने फरमायाः हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः 3 लोग किसी आवश्यकता के लिए चले एवं इन्होंने एक गुफा में पना ली, तो वह चट्टान गुफा पर गिर पढ़ी एवं बिल्कूल निकलने की स्थिति ना रही। वह आपस में एक दूसरे से कहने लगेः ऐ साथियो! तुम अपने अच्छे व भले कर्म के बारे में सोंचो एवं इस के वसीले से अल्लाह तआ़ला से दुआ़ व प्रार्थना करो! निस्संदेह अल्लाह तआ़ला तुम से कठिनाई को दूर कर देगा। इन में एक ने कहाः ऐ अल्लाह! एक अजनबी महिला के साथ मेरे संबंध थे मैं उस के पास कसरत से जाया करता था। मैं ने इसे तुझ (अल्लाह से) से ड़रते हुए और तेरी सन्तुष्टि चाहते हुए छोड दिया। तू जानता है के यदि मैं ने केवल तेरी सन्तुष्टि के लिए इस से दूरी प्राप्त की है तो हम से इस कठिनाई को दूर कर। सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः तो चट्टान का एक तिहाई ाग इन से हट गया के इन्हें वहाँ से निकलने की उम्मीद हो गी। किन्तु ना निकल सके। दूसरे व्यक्ति ने कहाः ऐ अल्लाह! मेरे यहाँ चंद मज़दूर थे। जो काम

किया करते थे (रावी ने कहाः) मैं समझता हुँ के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः तो इन में से प्रत्येक ने अपनी मजदूरी ले ली एवं के मजदूर ने अपनी मजदूरी छोड दी तथा इस ने विचार किया के इस की मजदूरी इस के साथियों की मजदूरी से अधिक है। (इस व्यक्ति ने कहाः) मैं ने अपने धन से इस की मजदूरी अलग की, यहाँ तक के वह खूभ धनी हो गए। वह मेरे पास दरिद्र और बूझा हो कर आया, एवं कहाः मैं तुझे मेरी मजदूरी के संबंधित अल्लाह तआ़ला की याद दिलाता हुँ। मुझे इस की आवश्यकता है, तो मैं (इस के) साथ घर के ऊपर गया एवं इसे धरती का नशीबी भाग यथा मैदान बताया के अल्लाह तआ़ला ने इस की मजदूरी में दन तथा मवैशियों के सूरत में जो बरकत दी थी एवं मैं ने सइस से कहाः तू मुझ से मज़ाक ना कर। अल्लाह तेरा भला करे। इस ने कहाः मैं इसे कम चाहता तब भी तुम मेरा इन्कार कर सकते थे (परन्तु तवखुअ़ के विरुद्ध इतना सब कुछ देने के लिए त्यार हुँ) इस के इस कहने के बावजूद ऐ अल्लाह ! मैं ने तुझ से ड़रते हुए और तेरी प्रसन्नता चाहते हुए सब कुछ इस के हवाले कर दिया, तू जानता है के यदि मैं यह सब तेरी सन्तुष्टि के लिए किया है तो हम से इस कठिनाई को दूर कर। तो चट्टान का एक और तिहाई भाग हट गया। फिर भी वह निकल ना सके। तीसरे व्यक्ति ने कहाः ऐ मेरे रब! मेरे बूढे माता-पिता थे, मेरे सिवा इन का कोई सेवक करने वाला और देख-भाल करने वाला और ना कोई कफील (नीरीक्षक) था। दिन भर मैं इन की देखभाल करता और रात इन की सेवा में गुज़ारता। चिरागा बहुत दूर थी और मैं देवड़ के साथ दूर निकल गया। एक बार मैं रात गुज़रने के बाद आया। जब तक वह दोनो सो चुके थे मैं ने बरतन में दूध दोहा और वह बरतन ले कर मैं इन के सरहाने बैठ गया एवं श्रेष्ठ ना समझा के इन्हें जगाउँ जब तक के वे दोनों खूद ना उठ जाएं। ऐ अल्लाह! तू जानता है यदि मैं ने तेरे लिए यह कर्म किया है, तू इस कटिनाई को दूर कर। तो चट्टान का बाखी भाग इन से हट गया और वह आसानी के साथ वहाँ से निकल गए।

www.Ziaislamic.com

(मजमअ़ अज़ ज़वाईद, मुसनद अ़ला बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु, 13415)

अल्लाह तअ़ाला के इन मुखलिस बन्दों के कर्म की ये शान व प्रतिभा है के अल्लाह तअ़ाला के दरबार में इसे वसीला बनाया जा रहा है एवं इस वसीले को रब स्वीकार का स्तर भी प्रदान कर रहा है तो अब यह हमारे लिए सोंचने का स्थान है के जब इन के कर्म का यह स्तर है के वह अल्लाह के दरबार में स्वीकृत वसीला बन रहे हैंतो फिर कर्म करने वाले मुखलिसीन की काय शान व प्रतिभा होगी।

अल्लाह तअ़ाला के निकट इन का स्थान व स्तर कितना ऊँटा होगा एवं अल्लाह तअ़ाला इन से नाता रखने वाले और इन्हें अपने दरबार में वसीला बनाने वालों के दामन में किस प्रकार बरकतों तथा वरदानों को प्रदान करेगा.

इस का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। अधिक हमारे लिए यह बात भी अभ्यास प्राप्त करने की है के जो कर्म अल्लाह तअ़ाला के खौफ के कारण से किया जाता है, वह स्वीकार होता है।

नफ्स का निरखना एवं अल्लाह का खौफ- समय की अवश्यकता

आज के इस भ्रष्टाचार दौर में हमें अपने नफ्स को निरखना चाहिए। आज हर कई धन व सम्पत्ति जमा करने कि चिन्ता में है। ना हलाल रोज़ी का ध्यान है ना हराम की कोई सूचना और ना हमें अपनी सामाजिक व आर्थिक जिम्मेदारियों का एहसास है।

हमें चाहिए के अपने दिलों में अल्लाह तआ़ला का खौफ पैदा कर के अपने मामलात शरीअ़त की रोशनी में परिणाम दें। सामाजिक जीवन तथा शिष्ठाचार के चरित्र को हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के असवह हुसना के सांचे में ढालने की कोशिश करें।

हज़रत शैखुल इसलाम का खौफ व भय की भावना

ऑलिया अल्लाह की मुबारक जीवन में हमें धर्मनिष्ठा व तहारत के विशाल उदाहरण मिलते हैं। इ़बादत व रियाज़त के साथ इन के जीवन का तरीक़ेकार कया था।

वह अपने मामलात को किस उत्तमता से परिणाम देते थे। समाज व व्यापार के सिलसिले में वह किसे स्थान को अपनाया करते एवं अल्लाह तआ़ला से कितना खौफ व भय किया करते थे। यह हमें जानने की आवश्यकता है ताकि एक स्पष्ठ रास्ता हमारे सामने हो। इस सिलसिले में हज़रत शैखुल इसलाम इ़माम मुहम्मद अनवारुल्लाह फारूखी रहमतुल्लाहि अलैह का अनुसरण करने के योग्य घटना होः

हज़रत शैखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह अपनी शादी के 3 वर्ष बाद आर्थिक विभाग में लेखापाल के पद से सरकारी कर्मचारी हो गए थे। देढ वर्ष बाद आप के पास एक ऐसी फाइल हिसाब लिखने के लिए आईः जो ब्याजी व सूदी व्यापार पर निर्भर था।

आप ने उस लेखन का हिसाब लिखने के बिना त्यागपत्र व स्मरपण लिख कर पेश कर दिया। उच्च ओहेदार ने कारण पूछी तो बताया के सरकार

www.Ziaislamic.com

सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने ब्याजी व सूदी मामलात करने वाले, इसकी गवाही देने वाले एवं इसकी लेखन करने वाले पर लानत भेजी है। अर्थात यह रोजगारी करना मेरे लिए जाइज़ नहीं।

उच्च ओहेदार ने हज़रत शैखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह की उदारता के पेश नज़र कहा के आगे से आप के पास ऐसी कोई फाइल नहीं भेजी जाएगी। स्मरपण वापस ले लीजिए।

किन्तु आप ने उदारता व अल्लाह तआ़ला के खौफ व भय की भावना के साथ यह कहते हुए इस पेश कश को उपेक्षित कर दिया के आप जब तक रहेः यह छुट रहेगी।

आप के बाद आने वाले अफसर व ओहदेदार से यह उम्मीद नहीं के मुझे यह छुट दे। अतः इस प्रकार के मामलात की रोजगारी मेरे लिए श्रेष्ठ नहीं।

हमें चाहिए के वर्णन क़ुरान की आयतें, हदीसें तथा सालेहीन के कथन को बुद्धि में बिठा लें। हमारे दिल में अल्लाह तआ़ला का खौफ हो। इस का भय हो। अल्लाह तआ़ला का खौफ हम अपने दिल में रख कर के जीवन गुज़ारें तो हमारे कर्म शरीअ़त के अनुसार रहेंगे।

हम इ़बादत करेंगे तो खूबी व श्रेष्ठ रूप से। व्यापार करेंगे तो उस की मरज़ी के अनुसार करेंगे। माता-पिता के अधिकार, अन्य रिश्तेदारों के अधिकार, पड़ोसियों के अधिकार एवं सम्पूर्ण संबंधित लोगों के अधिकार सही व उचित रूप से संपादन करेंगे।

और हर क़दम उठाने से पूर्व सोंचेंगे के कया इस से अल्लाह तआ़ला नाराज़ तो नहीं होगा। फिर यदि वह कर्म इस की मरज़ी व सन्तुष्टि के अनुसार हो तो समापन करेंगे वरना इस के सम्मुख अल्लाह तआ़ला की मरज़ी को अधिमान व तरजीह देंगे।

इस प्रकार हम अल्लाह तआ़ला एवं इस के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की प्रसन्नता तथा उस की नेअमतों व वरदान को प्राप्त कर पाएँगे।

अल्लाह तआला से दुआ है के वह हमारे दिलों को अपने ख़ौफ़ व भय तथा क़शियत से भर दे। सहाबा किराम, अहले बैत इज़ाम तथा बुज़ुर्गाने-दीन (धर्म के पूर्वजों) का पालन करते हुए नफ्स का मुहासबा करने तथा आखिरत का सोंच-विचार व ध्यान रखने की तौफ़ीक़ व एवं मार्गदर्शन प्रदान करे।

आमीन